ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 6, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

उपन्यास : अर्थ, स्वरूप, तत्व, उद्भव और विकास

उम्मेद गोठवाल, सह–आचार्य (हिन्दी), राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरू

प्रस्तावना :

उपन्यास मानव जीवन का गद्यात्मक महाकाव्य है। यह गद्य साहित्य का अन्यतम रूप है जिसका आधार कथा है। जीवन की वास्तविकताओं, भावनाओं, टकराहटों, समझौतों, अन्तः संबंधों या कहे कि विविध जटिलताओं के बीच जीये जा रहे जीवन का एकदम नया, सर्जनात्मक रूप प्रस्तुत करना ही उपन्यास का अभिप्रेत होता है। उपन्यास पाठक को उसके दैनिक जीवन की ठोस वास्तविकताओं से उठाकर एक अधिक परिपूर्ण और सत्य लगने वाले कल्पना जगत् में ले जाता है। परन्तु ऐसा वह भावोत्तेजन के सहारे नहीं कथा की रोचकता व कुतूहल के सहारे करता है। आधुनिक युग में जिस साहित्य वि ोश के लिए उपन्यास भाब्द का प्रयोग किया गया है उसकी प्रकृति को स्पश्ट करने के लिए ये भाब्द सर्वथा उपयुक्त है। यो तो उपन्यास भाब्द का प्रयोग प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी मिलता है परन्तु साहित्य की अन्य गद्य विधाओं की तरह उपन्यास का आविर्भाव आधुनिक काल में ही हुआ है। कहानी का संबंध जहां वाचिक परम्परा से रहा वहीं उपन्यास कभी श्रव्य नहीं रहा। उपन्यास की पहचान उसका पाठय होना ही है। उपन्यास के लिए अंग्रेजी में नॉवेल, गुजराती में नवलकथा, मराठी में कादम्बरी, बंगला तथा हिन्दी में उपन्यास भाब्द के प्रयोग का प्रचलन रहा है। उपन्यास अंग्रेजी के नॉवेल का पर्याय व रूपान्तर है जिसका अर्थ होता है नया। मूलतः ये भाब्द इतावली भाशा से है वहां भी इसका अर्थ नये से ही है। उपन्यास भाब्द नॉवेल के लिए इतना रूढ हो गया है कि इसके अन्य अर्थ लुप्तप्राय हो गये हैं। हिन्दी में उपन्यास भाब्द उप अर्थात समीप और न्यास अर्थात थाती, धरोहर या रखना के योग से बना है जिसका अर्थ हुआ निकट रखी हुई वस्तु। अर्थात् वह कृति जिसको पढकर महसूस हो कि यह हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है, इसमें हमारी ही कथा कही गई है। स्पश्ट है कि उपन्यास आधुनिक युग की उपज है। साहित्य में जितने रूपविधान हो सकते हैं उनमें उपन्यास का रूपविधान सबसे लचीला है और वह परिस्थिति के अनुसार कोई भी रूप धारण कर सकता है।

पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने अपने–अपने ढंग से उपन्यास को परिभाशित करने का प्रयास किया है। उपन्यास की परम्परा पि चम में पहले मिलती है अतः यहां पहले उन्हीं परिभाशाओं का उल्लेख उचित होगा। फ्रांसिस बेकन के अनुसार ''उपन्यास कल्पित इतिहास है।'' फिल्डिंग उपन्यास को मनोरंजनपूर्ण गद्य महाकाव्य मानते हैं। क्लॉस रीव के अनुसार ''उपन्यास समकालीन युग के यथार्थ जीवन और उसकी रीति नितियों का चित्रण है।'' रिचर्ड बर्टन के अनुसार ''उपन्यास समसामयिक समाज और उसके मंगलकारी तत्वों का वह व्यापक अध्ययन है जो प्रेमतत्व की संचालिका भाक्ति से अनुप्रेरित रहा करता है क्योंकि प्रेम ही मानव मात्र को परस्पर सामाजिक बंधन में बांधने में समर्थ हुआ करता है।'' न्यू इंग्लि ा डिक ानरी के अनुसार ''उपन्यास वृहत् आकार गद्य आख्यान या वृतांत है जिसके अन्तर्गत वास्तविक जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों को कथानक में चित्रित किया जाता है।'' पा चात्य विद्वानों की तरह हिन्दी के विद्वानों ने उपन्यास को अलग–अलग तरह से परिभाशित किया है। भयामसुन्दर दास के अनुसार ''उपन्यास मनुश्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।'' प्रेमचन्द उपन्यास को मानव जीवन का चित्र समझते हैं। उनके अनुसार मानव चरित्र पर प्रका ा डालना और उसके रहस्यों

को उद्घाटित करना ही उपन्यास का मूल तत्व है। बाबू गुलाबराय के अनुसार ''उपन्यास कार्य–कारण श्रृंखला में बंधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक उद्घाटन किया जाता है।'' डॉ. भागीरथ मिश्र के अनुसार ''युग की गति ील पृश्ठभूमि पर सहज भौली में स्वाभाविक जीवन की पूर्ण झांकी को प्रस्तुत करने वाला गद्य ही उपन्यास कहलाता है।'' गोपाल राय के अनुसार ''उपन्यास पर्याप्त आकार की वह मौलिक गद्यकथा है जो पाठक को एक काल्पनिक पर यथार्थ संसार में ले जाती है, जो लेखक द्वारा अनुभूत और सर्जित होने के कारण नवीन होता है।'' संक्षेप में कह सकते हैं कि उपन्यास गद्य साहित्य का एक अन्यतम रूप है जिसका आधार कथा है। सभी परिभाशाओं का सार यही है कि उपन्यास में मानव जीवन का प्रतिनिधित्व होना चाहिए उसमें घटनाएं श्रृंखलाबद्ध, वास्तविकता की सेवा में नियोजित कल्पना युक्त हो। वर्तमान में उपन्यास महान सत्यों और नैतिक आद ार्ो का एक मूल्यवान साधन बन गया है जो जीवन की कौ ालपूर्ण अभिव्यक्ति है। जीवन के व्यवहारिक सत्यों व रंजक तत्वों का उपन्यास में समावे ा होता है। उपन्यास वास्तव में जीवन की कौ ालपूर्ण अभिव्यक्ति है।

उपन्यास का विकास :

आविर्भाव काल : उपन्यास साहित्य की प्रमुख विधाओं में सबसे आधुनिक है। उपन्यास का उदय यथार्थवादी चेतना की अभिव्यक्ति से जुड़ा है। उपन्यास मध्यवर्गीय समाज की आव यकताओं, आकांक्षाओं से जुड़ा साहित्य रहा है। उपन्यास के लिए जिस संक्रातिकालीन समाज की अनिवार्यता है, जिसमें व्यक्ति व समाज का द्वन्द्व होता है वह आधुनिक काल में उपस्थित थी। उपन्यास कभी श्रव्य नहीं रहा है पाठय होना ही उसकी पहचान है। अतः आधुनिक काल की तमाम परिस्थितियों के साथ छापेखाने की उपलब्धता ने भी इस साहित्यिक विधा के विकास में अपना योगदान दिया।

आचार्य रामचन्द्र भुक्ल अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षा गुरू' को मानते हैं। विजय ांकर मल्ल, श्रद्धाराम फिल्लौरी के 'भाग्यवती' को व गोपाल राय, गौरीदत्त के 'देवरानी जेठानी की कहानी' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं। लेकिन अधिकां ा विद्वान 'परीक्षा गुरू' को ही हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं। बच्चन सिंह के अनुसार यथार्थवादी उपन्यासों की नींव का पत्थर यही उपन्यास है। वे प्रेमचन्द के आद ार्ोन्मुख यथार्थ की गंगा की गोमुखी इसी उपन्यास को मानते हैं। आरम्भिक उपन्यासकारों में बालकृश्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, लज्जाराम भार्मा का धूर्त रसिकलाल, राधाकृश्ण दास का निस्सहाय हिन्दु, जगमोहन सिंह का भयामास्वप्न, ब्रजनन्दन सहाय का सौन्दर्योपासक, अयोघ्यासिंह उपाध्याय के 'ठेठ हिन्दी का ठाट' व 'अधखिला फूल' उल्लेखनीय हैं। पूर्व प्रेमचन्द काल में पाठकों को हिन्दी उपन्यास की ओर मोड़ने का श्रेय देवकीनन्दन खत्री को दिया जा सकता है। चन्द्रकांता, चन्द्रकांता संतति और भूतनाथ की श्रृंखला में उन्होंने तिलस्म और ऐयारी की जो रहस्य रोमांच से भरी जादुई दुनिया रची उसमें अहिन्दी पाठक भी हिन्दी से जुड़ने को मजबूर हुआ। अंग्रेजी के जासूसी उपन्यासों से प्रभावित गोपालराम गहमरी ने भारतीय पृश्ठभूमि में जासूसी दुनिया रची। उन्होंने जासूस नाम की पत्रिका निकाली। उनके प्रमुख उपन्यासों में गुप्तचर, सिरकटी ला ा, जमुना का खून, खूनी खोज, जासूस की डायरी आदि प्रमुख है। उनके उपन्यासों की सूची लम्बी हैं। इस काल में सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास कि ोरीलाल गोस्वामी ने लिखे। प्रणयिनी परिणय, लवंगलता वा आद ार्बाला, तारा वा क्षात्रकुल कमलिनी, लखनऊ की कब्र वा भााही महलसारा आदि। इस काल के उपन्यास पुरातन प्रियता और नयेपन का मिलाजुला रूप है। इस समय के उपन्यासों

में नारी, ि ाक्षा, समाज सुधार, स्वातंत्र्य विचारबिन्दु है। घटनाएं वैचित्र्यपूर्ण, विस्मयावह, रोमांचकारी है। उपदे ाों की भरमार है। इस समय के उपन्यास निर्माणात्मक अवस्था में हैं। इनमें उच्च मध्यवर्गीय समाज का चित्रण हुआ है। राश्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक संकट की अभिव्यक्ति भी हुई है। ि ाल्प की दृश्टि से ये उल्लेखनीय नहीं है और इनकी भाशा बोलचाल व संस्कृत गद्यकाव्य की परम्परा वाली दोनों मिलती हैं। इनका महत्व आम पाठकों के बीच उपन्यास विधा को लोकप्रिय बनाने में है। इस संक्रातिकालीन समय में हिन्दी उपन्यास अपने स्वरूप की तला ा कर रहा था फिर भी लेखको ने अपने समय की समस्याओं को अपने ढंग से इन उपन्यासों में उठाया हैं व उनका समाधान प्रस्तुत किया हैं।

प्रेमचन्द युग : उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द की रचनात्मक सक्रियता दो द ाकों तक सीमित है। सेवासदन से गोदान तक की ये यात्रा 1918–36 के बीच सम्पन्न हुई। इन अठारह वर्शों में उपन्यास असाधारण रूप और गति से प्रौढ होता दिखाई देता हैं। सेवासदन में एक नया यथार्थवाद था जिसे प्रेमचन्द जन्म दे रहे थे। मधुरे ा लिखते है कि सर्वांगपूर्ण और स्वस्थ प्रभाव की दृश्टि से सेवासदन ही वह पहला उपन्यास है जिसने उपन्यास के उपलब्ध रूप को गहराई से बदला। प्रेमचन्द काल में उपन्यास जीवन समाज के व्यापक सत्य से जुड़ा। मध्यवर्ग, मजदूर, किसान उपन्यास के केन्द्र में आने लगे। साम्राज्यवाद विरोधी चेतना के विकास, साम्प्रदायिक सहयोग व सद्भाव के महत्व को बल मिला। प्रेमचन्द इस युग के ि ाखर लेखक हैं। उन्होंने हिन्दी उपन्यास को नई भाशा, नया मुहावरा प्रदान किया। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि, कायाकल्प, गबन, गोदान उनके प्रमुख उपन्यास है। उनके उपन्यास का फलक व्यापक है जिसमें वे यावृति, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, अछूतों की सामाजिक स्वीकृति, राजनीति, परिवार, प्रेम, भाईचारा, पारस्परिक वि वास, मध्यवर्ग की कमजोरियां सब समाहित है। गोदान भारतीय किसानों का मर्मस्प ार्ी, करूण, त्रासद दस्तावेज बन गया है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में वि वसनीय व आत्मीय पात्रों की सर्जना की। उन्होंने पात्रों को उपन्यासों में इस तरह रचा बसा दिया कि वे उन्हीं का हिस्सा होकर रह गये। कथाप्रस्तुति की दृ यात्मक–परिदृ यात्मक प्रविधि को उन्होंने ि ाखर पर पहुंचा दिया। जय ांकर प्रसाद का कंकाल व तितली, वि वम्भरनाथ भार्मा कौि ाक का मां व भिखारिणी, ि ावपूजन सहाय का देहाती दुनिया इस काल के महत्वपूर्ण उपन्यास है। चतुरसेन भाास्त्री, राधिका रमण प्रसाद सिंह व उशादेवी मित्रा इस युग के अन्य उल्लेखनीय उपन्यासकार है जिनका विशय विस्तार और ि ाल्पगत प्रयोग की दृश्टि से उल्लेखनीय योगदान है।

मनोवैज्ञानिक और प्रयोग ाील उपन्यास : फ्रायड के मनोवि लेशण और स्वप्न सिद्धांत के अनुभवों के आधार पर जो सिद्धांत प्रतिपादित किये गये उन्हें साहित्य और कला जगत् में पर्याप्त स्वीकृति मिली। मानव चरित्र के अध्ययन, मनोविज्ञान की जटिलताओं, सूक्ष्म तनाव, मस्तिश्क व हृदय का द्वन्द्व आदि को मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के विशय बनाए गये। हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यास अनेक प्रयोगों की भूमि रहे हैं। जैनेन्द्र अपने उपन्यास परख, सुनीता, त्यागपत्र आदि में विचारों की जो दुनिया निर्मित करते हैं उसमें वास्तविकता व वि वसनीयता का उतना महत्व नहीं है जितना विचारों से पैदा होने वाली उत्तेजना व प्र नकूलता से है। इलाचन्द्र जो ाी के घृणामयी, प्रेत की छाया, जिप्सी, जहाज का पंछी, आदि उपन्यासों मे मनोवि लेशणवाद, जटिल मानसिक बुनावट, अहंवादिता, आत्मरति आदि को देखकर लगता है कि वे फ्रायड से ज्यादा एडलर के हीनता ग्रन्थि वाले सिद्धांत से प्रभावित है। अज्ञेय का 'भोखर एक जीवनी' मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सिरमौर है। इसमें अभिव्यक्त व्यक्तिवादी, अहंवादी प्रवृति के कारण नन्ददुलारे वाजपेयी ने इसे मनोवैज्ञानिक प्रयोगों का पुतला कहा है। इसका स्थान कथ्य, ि ाल्प, और भाशा सभी दृश्टियों से महत्व का है। यह हिन्दी उपन्यास परम्परा का विकास भी है और एक महत्वपूर्ण मोड़ भी है। जीवन के अनुभव

व आस्थाओं से ही अज्ञेय ने 'नदी के द्वीप' व 'अपने अपने अजनबी' को बुना है। अज्ञेय हिन्दी में आधुनिक भावबोध को प्रतिश्ठित करने वाले लेखक है। प्रयोग ील उपन्यासकारों में आधुनिकता के साथ परम्परा, भारतीयता, व्यक्ति स्वातंत्र्य की अवधारणा प्रमुख है। देवराज का 'पथ की खोज' भी उल्लेखनीय है। धर्मवीर भारती का 'गुनाहों का देवता' आधुनिकता और रोमान के तनाव को बखूबी व्यक्त करता है। इसमें सरस भावुकतापूर्ण आद ावादी अ ारीरी प्रेम का मार्मिक अंकन है। वहीं 'सूरज का सातवां घोड़ा' निम्न मध्यवर्ग के सपने, आकांक्षाएं व मोहभंग की कु ाल अभिव्यक्ति है। व्यापक और यथार्थ जन जीवन के अभाव में केवल अन्वेशण के सहारे कुछ उपन्यास तो कालजयी हुए पर दुहराव के साथ स्थाई छाप छोड़ पाना कठिन कार्य था। भारतभूशण अग्रवाल, गिरधर गोपाल, लक्ष्मीकांत वर्मा, प्रभाकर माचवे, सर्वे वरदयाल सक्सेना इस धारा के प्रमुख नाम है।

सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास : प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यास में जो सर्जनात्मक विस्फोट होता है उसमें मनोवैज्ञानिक प्रयोग ील उपन्यास तो है ही उसके साथ समाज के बहुवर्णी यथार्थ को वि वसनीयता के साथ प्रस्तुत करने वाले लेखक भी है। समाज के प्रति इनका रूख आलोचनात्मक है और ये यथास्थितिवाद का विरोध करके सामाजिक परिवर्तन की मूलगामी आकांक्षा के साथ खड़े दिखाई देते हैं। पाण्डेय बेचन भार्मा उग्र के उपन्यास चन्द हसीनो के खतूत, दिल्ली का दलाल, बुधुवा की बेटी, सरकार तुम्हारी आंखों में, कांता आदि को उत्तेजक, आवे ापूर्ण व भण्डाफोड़ भौली के उपन्यास कहा जा सकता है इनके विशय भी विस्फोटक किस्म के ही है। अगर इनका सही मूल्यांकन होता तो अपनी बेधक व विस्फोटक मूल्यदृश्टि के कारण ये मूल्यवान लेखक साबित होते हैं। साम्प्रदायिकता, वे यावृति, अस्पृ यता, स्त्री की नियति इन उपन्यासों के प्रमुख विशय रहे हैं। निराला ने अपने उपन्यास अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरूपमा, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा में नारी, दलित व वंचित वर्ग को केन्द्र में रखकर व्यापक स्तर पर जनजीवन को चित्रित किया है। भगवतीचरण वर्मा ने चित्रलेखा, टेढे मेढे रास्ते, भूले बिसरे चित्र, सबहि नचावत राम गुसाई में जीवन व समाज के व्यापक सवालों को उठाया है। उपेन्द्रनाथ अ क ने गर्म राख, एक नन्ही किन्दील, बांधों न नाव इस ठांव आदि उपन्यास लिखे। विश्णु प्रभाकर ने स्वप्नमयी, दर्पण का व्यक्ति, अद्धनारी वर आदि उपन्यासों में गांधीवादी और आर्य समाजी विचार दृश्टि से सामाजिक समस्याओं को देखा। अमृतलाल नागर ने बूंद और समुद्र, भातरंज के मोहरे, सुहाग के नुपूर, अमृत और विश, नाच्यो बहुत गोपाल, खंजन नयन जैसे महत्वपूर्ण उपन्यास लिखे। नरे ा मेहता के डूबते मस्तूल, यह पथ बन्धु था, उत्तर कथा जैसे उपन्यास इसी भावभूमि की प्रतिनिधि रचनाएं है।

प्रगतिवादी उपन्यास : प्रगतिवादी लेखन की व्यवस्थित भ्रुरूआत 1936 में प्रगतिवादी लेखक संघ की स्थापना के बाद हुई। प्रगतिवाद दरअसल पूंजीवादी और साम्राज्यवादी व्यवस्था के विरूद्ध सार्थक और रचनात्मक हस्तक्षेप है। इसने जन चेतना को एक विस्फोट और ऊर्जा सम्पन्न आन्दोलन में बदल दिया। राहुल सांकृत्यायन ने सिंह सेनापति, जय यौधेय, मधुर स्वप्न, दिवोदास आदि उपन्यासों के माध्यम से मनुश्य के कल्याण, श्रम और भोग की समता, वर्गमुक्त भोशणहीन समाज का द ान पाठकों के सम्मुख रखा। य ापाल के उपन्यास दादा कामरेड, दे ाद्रोही, दिव्या, अमिता, झूठा सच, क्यों फंसे, मेरी तेरी उसकी बात आदि प्रगतिवादी मूल्यों में आस्था व वि वास को रेखांकित करते हैं। वे समाज में लेखक की परिकल्पना श्रमिक के रूप में करते हैं और उसकी उपयोगिता बेहतर समाज के निर्माण में मानते हैं। नागार्जुन के उपन्यास रतिनाथ की चाची, बलचनमा, बाबा बटेसरनाथ, दुखमोचन, कुंभीपाक, इमरतिया आदि प्रगतिवाद की मुखर अभिव्यक्ति व विस्तार है। नागार्जुन की प्रेरणा ि ाल्प के कौ ाल से नहीं वरन जीवन के अनुभवों की गहराई और तिक्तता से भाक्ति पाती है। रांगेय राघव के उपन्यास घरौंदे, सीधा साधा रास्ता, कब तक पुकारू, चीवर, अंधेरे के जुगनू, मुर्दो का टीला आदि तथा भीश्म साहनी के उपन्यास झरोखे, कुंतो, कड़िया,

तमस, मय्यादास की माड़ी का फलक व्यापक है। भैरवप्रसाद गुप्त, अमृतराय ने इसी भावबोध को अभिव्यक्ति दी। एक साहित्यिक आन्दोलन के रूप में भले ही प्रगतिवाद सन् 36 से भुरू हुआ हो पर एक चेतना के रूप में वह पहले से मौजूद था और एक सबल प्रतिरोध के रूप में साहित्य में सदैव बना रहा है।

आंचलिक उपन्यास : हिन्दी में आंचलिकता की चर्चा फणी वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' से भुरू होती है। आंचलिक उपन्यास में अंचल एक स्वतंत्र और सम्पूर्ण व्यक्तित्व बनकर उपस्थित रहता है। उस अंचल के नृतत्व भाास्त्रीय वैि ाष्टय से लेकर उसका भौगोलिक परिवे ा, सांस्कृतिक व लोक तात्विक चरित्र, वे ाभूशा, राग–रंग, उत्सव–त्यौंहार आदि अपनी समग्रता और जीवंतता में उपस्थित रहता हैं। अंचल का यह वैि ाष्टय पात्रों के माध्यम से उनके जीवन और व्यवहार से उभरकर आना चाहिए। रेणु का मैला आंचल अपनी सम्रगता में आंचलिक उपन्यास का उत्कर्श है। उनके परती परिकथा, जुलूस, कितने चौराहे, दीर्घतपा, पल्टू बाबू रोड अन्य उपन्यास है पर उनकी कीर्ति का अक्षय स्मारक मैला आंचल ही है। राही मासूम रजा के उपन्यास आधा गांव का आगमन भी एक धमाके की तरह ही होता है। गाजीपुर के एक गांव गंगोली के मुसलमानों की ये कथा साहित्य प्रेमियों का कंठहार बन गई है। उनके अन्य उपन्यासों में टोपी भुक्ला, हिम्मत जौनपुरी, दिल एक सादा कागज, सीन–75, कटरा बी आर्जू प्रमुख है। उदय ांकर भट्ट के सागर लहरे और मनुश्य, आधार, वह जो मैंने देखा, रामदर ा मिश्र के पानी की प्राचीर व जल टूटता हुआ, विवेकी राय के बबूल, पुरूश पुराण, समर भोश है, सोना माटी, भौलेश मटियानी के हौलदार, चिट्ठी रसैन, चौथी मुट्ठी, जल तंरग, छोटे छोटे पक्षी, राजेन्द्र अवस्थी के सूरज किरण की छांव, जंगल के फूल आदि इस धारा के प्रमुख नाम है। आंचलिक उपन्यास ने एक आन्दोलन के रूप में लोकजीवन के लुप्तप्रायः आकर्शण को नये सिरे से जीवित किया। दे ा के अनेक अछूते, अपरिचित भू–भागों से परिचय करवाया। अंचलों से संबंधित लोकगीतों, लोकभाशा, उनसे जुड़े अछूते बिम्बों, प्रतीकों, रंग, लय, ध्वनियों का पुनराविश्कार आंचलिक उपन्यासों के माध्यम से किया गया।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक उपन्यास : यू ंतो हर काल में ऐतिहासिक उपन्यास लिखे जाते रहे है। ये परम्परा प्रेमचन्द से पहले की है। ये अलग बात है कि इतिहास के विद्यार्थी होते हुए भी प्रेमचन्द ने कोई ऐतिहासिक उपन्यास नही लिखा। ये विभाजन काल सापेक्ष न होकर विशय सापेक्ष है। इतिहास और साहित्य दो अलग विशयों को एक साथ रखने के अपने जोखिम भी है फिर भी हिन्दी में पर्याप्त संख्या में ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गये है। यहां केवल उन्हीं उपन्यासकारों का उल्लेख अपेक्षित है जो अपनी समग्रता में ऐतिहासिक उपन्यासकार ज्यादा ठहरते हैं। ऐतिहासिक पृश्ठभूमि में प्रस्तुत पात्रा भले ही काल्पनिक हो पर वे हमारी ही तरह कभी विद्यमान भी रहे हैं उनके जीवन के विविध पक्षों का अंतरंग व वि वसनीय प्रस्तुतीकरण ही ऐतिहासिक उपन्यास की सफलता का मूलाधार होता है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृश्ठभूमि पर लिखे गये उपन्यासों में वृन्दावनलाल वर्मा अग्रणी है। उनके उपन्यास गढकुण्डार, मृगनयनी, विराटा की पदमिनी, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, माधव जी सिंधिया प्रमुख है। राश्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में मुक्ति चेतना उनकी इतिहास दृश्टि की मुख्य घटक थी। आचार्य चतुरसेन भाास्त्री के वै ाली की नगरवधू, वयं रक्षामः, सोमनाथ, आलमगीर, गोली इस धारा के प्रमुख उपन्यास है। हजारीप्रसाद द्विवेदी बाणभट्ट की आत्मकथा, चारू चन्द्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा के माध्यम से भारतीय इतिहास और संस्कृति का उदात्त और उज्ज्वल पक्ष रखते हैं। ि ावप्रसाद मिश्र रूद्र का 'बहती गंगा' में निम्न और मध्यवर्गीय पात्रों को आधार बनाकर का ाी के दो सौ वर्शो के सांस्कृतिक इतिहास को प्रस्तुत किया है।

स्वातंत्र्योतर उपन्यास : स्वतंत्रता के बाद बदली हुई परिस्थितियों की अभिव्यक्ति इन उपन्यासों में हुई। औद्योगिकीकरण, भ्रश्ट व्यवस्था, बदलते परिवे ा, बदलते बिगड़ते मानवीय मूल्यों, यांत्रिक सभ्यता के दुश्परिणाम की अभिव्यक्ति इन उपन्यासों का प्रमुख विशय रहा है। गजानन माधव मुक्तिबोध का उपन्यास 'विपात्र' स्वाधीन भारत में विकसित विद्रूपताओं को आइना दिखाता है। राजेन्द्र यादव के सारा आका ा, उखड़े हुए लोग, अनदेखे अनजाने पुल, भाह और मात, मंत्रविद्ध आदि उपन्यासों में स्वाधीनता के बाद उपजी स्थितियों के बीच अवसरवादी, सत्ताकामी, नैतिक अपक्षय वाली राजनीतिक दृश्टि को भी उद्घाटित किया गया हैं। हरि ांकर परसाई अपने उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' में विकृतियों और विद्रूपताओं के विरूद्ध व्यंग्य को हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं। इसी व्यंग्य का प्रयोग श्रीलाल भुक्ल 'राग दरबारी' में करते हैं और यही कारण है कि अपने समय की विद्रूपताओं के प्रति यह उपन्यास एक तल्ख टिप्पणी बन जाता है। अमरकांत के सूखा पत्ता, दीवार और आंगन, काले उजले दिन, कृश्ण बलदेव वैद के उसका बचपन, दर्द ला दवा, नर–नारी, नसरीन, गुजरता हुआ जमाना, राजकमल चौधरी के उपन्यास नदी बहती थी, एक अनार : एक बीमार के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। मोहन राके ा अंधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, अंतराल आदि उपन्यासों में स्वाधीनता के बाद उपजी स्थितियों को संवेदना के साथ व्यक्त करते हैं। अकेलेपन की यंत्रणा उनकी प्रमुख थीम रही है। आकांक्षा और हता ाा का तनाव उनके साहित्य में सर्वत्र व्याप्त है। निर्मल वर्मा वे दिन, लालटीन की छत, एक चिथड़ा सुख में परिवे ा को जीवंत पात्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मनोहर भयाम जो ाी 'कुरू कुरू स्वाह' में स्वीकृत और उपलब्ध ढांचे को तोड़कर व्यक्तित्व के विघटन की त्रासदी को अभिव्यक्त करते हैं। कमले वर, ि ाव प्रसाद सिंह, भााानी, मार्कण्डेय, हृदये ा, बदीउज्मा, गिरिराज कि ोर, कृश्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उशा प्रियंवदा ने इस दौर के उपन्यास को नये आयाम प्रदान किये।

उपसंहार :

संस्कृति, राजनीति और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा एवं छटपटाहट के आधार पर इसे पिछले द ाकों से भिन्न माना जा सकता है। समकालीन दौर में उपभोक्तावाद, निम्न मध्यवर्गीय जीवन, आदिवासी जीवन का तनाव, नारी मुक्ति, पितृ सत्तात्मक समाज, दिग्भ्रमित युवा पीढी, पारिवारिक विघटन, पलायन आदि विशय उपन्यास से जुड़ते हैं। विशय विविधता की दृश्टि से का ीनाथ सिंह का 'अपना मोर्चा' छात्र आन्दोलन व उनकी समस्याओं को गम्भीरता से उठाता है। सती ा जमाली का 'प्रतिबद्ध' औद्योगिक परिवे ा, रमाकांत का 'जुलूस वाला आदमी', राजनीति से मोहभंग को बखूबी द ार्शाता है। स्वयंप्रका ा का उपन्यास 'बीच में विनय' कस्बाई संस्कार को तो गोविन्द मिश्र 'वह अपना चेहरा' में व्यवस्था के विरोध को रेखांकित करते हैं। रमे ा उपाध्याय 'दण्डदीप' में कि ोर जीवन की अन्तहीन यातना तो कामतानाथ 'एक और हिन्दुस्तान' में जेल के भीतर से दे ा की अलग तस्वीर रखते हैं। पंकज बिश्ट 'लेकिन दरवाजा' में पहाड़ से दिल्ली में बसे बुद्धिजीवियों को तो मंजूर एहत ााम 'सूखा बरगद' में भारतीय मुसलमान की मानसिकता, द्वन्द्व, तनाव, आ ांकाओं को वि वसनीय व संवेदन ाील रूप में अंकित करते हैं। अब्दुल बिस्मिलाह 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' में बनारस के बुनकरों के भोशण व अभाव की अन्तरंग झांकी प्रस्तुत करते हैं। सुरेन्द्र वर्मा 'मुझे चांद चाहिए' में छोटे भाहर की लड़की की सर्जनात्मक आकांक्षाओं का आका ा तला ाते हैं। समकालीन साहित्य का फलक व्यापक है और इसकी जद में जीवन की सम्पूर्ण सक्रियता समाहित है। ममता कालिया, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, चन्द्रकांता, अलका सरावगी, भगवानदास मोरवाल सरीखे कितने ही नाम है जिन्होंने अपने कथ्य, ि ाल्प और भाशा से समकालीन उपन्यास को समृद्ध किया है।

अधुनातन साहित्य में विम र्श का दौर चला है और उपन्यास भी उससे अछूता नहीं है। आज साहित्य में स्त्री, दलित, आदिवासी, थर्ड जेन्डर जैसे विम र्श मजबूती से अपना मुकाम बना रहे हैं और उन्होंने केन्द्रीय स्थिति हासिल कर ली है। स्त्री, दलित, मुस्लिम साहित्य में हमे ा से मौजूद रहे हैं पर उनका स्वरूप जुदा था। अपनी मुखर अभिव्यक्ति से अभी ये विम र्श साहित्य के केन्द्र में है। सहानुभूति बनाम स्वानुभूति के विवाद के बरक्स साहित्य समृद्ध होता जा रहा है। स्त्री विम र्श के उपन्यासकारों में प्रभा खेतान का नाम सिरमौर है। 'आओ पेपे घर चले' उपन्यास में अमेरिका की पृश्ठभूमि लेकर वे प्रतिपादित करती है कि स्त्री चाहे किसी भी दे ा की हो उसकी समस्याएं कमोबे ा एक ही है। चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुश्पा, कृश्णा सोबती, मेहरून्निसा परवेज, नासिरा भार्मा आदि स्त्री विम र्श के प्रमुख नाम है। दलित विम र्श आन्दोलन से पहले जगदी ाचन्द्र का 'धरती धन न अपना', भौले ा मटियानी का सर्पगन्ध, ि ावप्रसाद सिंह का भौलूश, अमृतलाल नागर का नाच्यो बहुत गोपाल प्रमुख उपन्यास है जिनमें दलित जीवन को केन्द्र में रखा गया है। सहानुभूति बनाम स्वानुभूति में किसी दलित लेखक का दलित विम र्श का पहला उपन्यास जयप्रका ा कर्दम का छप्पर माना जाता है। वर्तमान में विम र्श के इस दौर में थर्ड जेन्डर ने भी प्रमुखता हासिल कर ली है। पत्र–पत्रिकाओं के वि ोशांक के साथ स्वतंत्र रूप में भी थर्ड जेन्डर साहित्य में एक विशय के रूप में समादृत है। आज चित्रा मुद्गल का नाला सोपरा, भगवंत अनमोल का जिन्दगी 50–50, निर्मला भुराड़िया का गुलाम मंडी, महेन्द्र भीश्म का 'किन्नर कथा' चर्चित व प्रमुख उपन्यास है। विम र्श के दायरे में व उससे बाहर साहित्य साधना सतत रूप से किया ील है। आज उपन्यास अपने कथ्य, ि ाल्प की दृश्टि से समृद्ध विधा है।

संदर्भ :–

1. **कथाघर – उम्मेद गोठवाल, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली**
2. **हिन्दी कहानी का विकास – मधुरेश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली**
3. **हिन्दी कहानी का इतिहास – गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली**